1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम : एक पुनरावलोकन

डॉ० मुकेश पाल
इतिहास विभाग।
सेठ तारीफ चन्द डिग्री कॉलेज
खट्टा प्रहलादपुर, बागपत

रोहित कश्यप
इतिहास विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ।

सारांशिका

सन् 1757 ई. के प्लासी के युद्ध के पश्चात् भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना हुई। इसके सी वर्ष बाद सन् 1857 ई. तक ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य उद्देश्य साम्राज्य विस्तार करना अर्थात् इसे आर्थिक शोषण यानि कि विजय, विलय और शोषण का इतिहास कह सकते हैं। डलहौजी का व्यपगत सिद्धांत, राज्यों के हड़पने की नीति, सहायक संधियों, सैनिक वर्ग को समुद्र पार भेजना, चर्बी वाले कारतूस का उपयोग, मूंछ ललाट बनाना, अप्रत्यक्ष रूप से भारतीयों के धर्म पर आघात करना, भारत में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों जैसे– सती प्रथा, विधवा विवाह, बाल विवाह, शिशु हत्या आदि पर प्रतिबंध लगाकर हस्तक्षेप करना, अर्थव्यवस्था के मामले में दखल देना सबसे बड़ा अभिशाप था। आर्थिक शोषण करके ही अंग्रेज भारत का धन इंग्लैंड ले जाते थे। इन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी के राजनैतिक शक्ति के प्रयोग से भारतीय हस्तशिल्प और व्यापार, सूती वस्त्रों का सर्वनाश कर दिया, नवीन कर व्यवस्था, लागू करके धन के दोहन का कार्य चलता रहा, अंग्रेजों ने धार्मिक मामले में भी हस्तक्षेप करके ईसाई धर्म को ही सर्वोपरि माना और इसी का प्रचार–प्रसार हेतु अधिक से अधिक लोगों को ईसाई बनाया। इन सभी कारणों से चारों ओर असंतोष व्याप्त हो रहा था और अंततः 1857 के आते ही विद्रोह का शंखनाद हो गया।

मुख्य बिन्दु : प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, साम्राज्य विस्तार, आर्थिक शोषण, सहायक संधि, व्यपगत सिद्धान्त, चर्बी वाले कारतूत, धार्मिक अहस्तक्षेप, धन निष्क्रासन का सिद्धान्त, कुटरी–उद्योग धन्धों का विनाश, ईसाई धर्म का प्रचार–प्रसार।

प्रस्तावना

सन् 1757 ई. में प्लासी के युद्ध के बाद भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना हुई थी। इसके सौ वर्षों बाद 1857 ईस्वी तक ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना अधिकार धीरे–धीरे व्यापार के माध्यम से शुरू किया किन्तु भारतीयों के आपस के झगड़ों का लाभ उठाकर मुट्ठी भर अंग्रेजों ने एक खुशहाल और समृद्धशाली देश को गुलामी से जकड़ लिया इन्होंने भारत पर विजय किसी वीरता या युद्ध कौशल के बलबूते पर नहीं की बल्कि कूटनीतिज्ञ और विश्वासघात से हासिल की थी। इसे भारत का दुर्भाग्य ही कह सकते हैं कि यहाँ की जनता ने आपस में लड़–झगड़कर बाहरी लोगों के हाथों अपने साम्राज्य की बागडोर सौंप दी।

अंग्रेजों की संपूर्ण कार्य व्यवस्था जो कि व्यापार से शुरू हुई थी धीरे–धीरे पूरे भारत वर्ष को हड़पने की कोशिश में बदलने लगी थी, अंग्रेजों का विचार प्रारंभ में तो इस देश में व्यापार बढ़ाने का था किंतु भारतीयों के मनमस्तिष्क को पढ़ने के बाद उनकी विचारधारा बदलने लगी और वे साम्राज्य विस्तार, धनलोलुपता के अधीन होकर भारतीयों पर अत्याचार करने लगे, भारतीय देशी रियासतों का स्वच्छंद एवं उन्मुक्त रूप से कार्य करने और अपनी–अपनी व्यवस्था से चलने एवं एकजुटता ना हो पाने के कारण अंग्रेजों ने इस कमजोरी का भरपूर फायदा उठाकर आपस में एक दूसरे के विरूद्ध लड़वाया, एक रियासत से दूसरी रियासत पर कब्जा किया, इसी तरह एक के बाद एक पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को अपने मकड़जाल में फंसा लिया तथा व्यापारिक दृष्टिकोण लेकर आये ये लोग इस देश तथा इसके आसपास के देशों के सरपरस्त (मसीहा) बन गये।''

क्रूरता और अन्याय की हर सीमा को पार करके इन्होंने ये साबित कर दिया कि ये मुसलमान शासक गजनवी, तैमूर लंग, नादिरशाह, चंगेज खां से किसी भी तरह कम नहीं हैं। अपने झूठे वादों, संधि–पत्रों के द्वारा इन्होंने रियासतों और राजा–महाराजाओं को पंगु बनाकर उन्हें उनके राज्य से बेदखल कर दिया। इस प्रकार अंग्रेजों द्वारा अनुचित व्यवहार की अनेक मिसालें दी जा सकती हैं। सन् 1857 ईस्वी की क्रांति की सही स्थिति समझने की कोशिश की जाये तो यह लगता है कि ये अचानक या कोई तात्कालिक कारण के वजह से होने वाली घटना नहीं है बल्कि इसके होने के पीछे उस समय की परिस्थिति एवं बहुत से कारण जिम्मेदार हैं जो अंग्रेजों द्वारा निर्मित किये गये थे। अंग्रेजों का भारतीयों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार करना, उन्हें हेय दृष्टि से देखना, जिस देश में वो लाखों करोड़ों का राजस्व कमा रहे हैं, उसी देश के नागरिकों को धीरे–धीरे पतन की ओर ले जाना, दिल्ली सम्राट बहादुर शाह के साथ अनुचित व्यवहार, इनके विरूद्ध साजिशें, इनकी संपत्तियों पर कब्जा, डलहौजी द्वारा बहुत सी रियासतों का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय, पेशवा के दत्तक पुत्र नाना साहेब की पेंशन बंद करा दी, जिसकी सुनवाई तक नहीं हुई, ये अन्याय असहनीय था, इसके बाद भी देश की जनता को मिशनरी से जोड़कर, उन्हें ईसाई बनाना, ईसाईयत का प्रचार–प्रसार किया गया। देश के अधिकांश लोगों में ये सोच पनप रही थी कि यहाँ के निवासियों, उनके मलिक व शासकों को कोई अंग्रेजी अधिकार प्राप्त नहीं थे, उन्हें अपमान व घृणा ही मिल रही थी, जिससे उनकी संस्कृति व अपनी पहचान दोनों पर आघात पहुँचा, धर्म असुरक्षित था, अपने ही देश में हम गुलाम बने थे, कानून व न्यायपालिका में देश का प्रतिनिधित्व करने वाला कोई भारतीय नेता मौजूद नहीं था। जिससे कि नागरिक हित प्रभावित हो रहे थे। उसी समय सैनिकों कों चर्बीयुक्त कारतूसों के उपयोग के लिये विवश करना और सैनिकों में असंतोष व्याप्त होना ही उस परिस्थिति में यही विद्रोह

का तात्कालिक कारण बन गया ये कुछ हद तक सही भी है किंतु इसने पहले से एकत्रित बारूद के ढेर में चिंगारी लगाने का कार्य किया था।

भारत से अंग्रेजों को हटाने के प्रयास सालों से किये जा रहे थे, देश के अंदर हर श्रेणी के लोगों में जबरदस्त वैचारिक असन्तोष उत्पन्न हो गया था, इसे केवल सुयोग्य नेतृत्व की आवश्यकता थी, जो इस असन्तोष से लाभ उठाकर सारे देश को स्वाधीनता के एक महान संग्राम के लिये तैयार कर सके और सौ साल से जमे हुये विदेशी शासन को उखाड़ फेंक सके एवं कोई अकस्मात् चिंगारी इस मसले पर पड़कर देश में भयंकर आग लगा दे। नतीजा फिर चाहे कुछ भी क्यों न हो और ऐसा हुआ भी एवं चर्बी वाले कारतूस इसका माध्यम बने।

सन् 1857 ई. का विद्रोह वास्तव में भारत में हिन्दू और मुसलमान नरेशों और भारतीय जनता दोनों की ओर से देश के विदेशियों को, राजनैतिक अधीनता से मुक्त कराने की एक जबरदस्त और व्यापक प्रयास था। इस प्रकार इन कारणों का आंकलन करने पर पाया गया कि सन् 1857 ई. की क्रांति का अभ्युदय होना वाजिब था, ये एक ऐसा युद्ध था जिसमें लोग अपने धर्म, अपनी कौम पर हुये अत्याचारों का बदला लेने व अपनी दबी हुई भावनाओं को जाग्रत करने के लिये उठ खड़े हुये। इस राष्ट्रीय प्रयत्न की तह में एक उतनी ही गहरी योजना और उनका व्यापक, गुप्त संगठन छुपा हुआ था जिसके लिये उन्होंने एकजुट होकर प्रयत्न किये। ऐसा माना जाता है कि इस विशाल योजना का सूत्रपात दोनों में से किसी एक स्थान पर हुआ था, कानपुर के निकट विदूर में या बिट्रेन की राजधानी लंदन में। इस तरह विद्रोह में अनेक लोगों द्वारा अलग–अलग रूप से प्रयास आरम्भ कर दिये गये थे जिससे कि देश में ही नहीं विदेशी शक्तियाँ जो अंग्रेजों के विरूद्ध थी उनको भी इस विद्रोह में सहयोगी बनने का अवसर मिला।

अंततः बैरकपुर छावनी में इस क्रांति का श्रीगणेश हुआ, जब वहाँ के भारतीय सैनिकों को चर्बीयुक्त कारतूस का जबरदस्ती प्रयोग करने व उनका धर्म नष्ट करने की कोशिश की गई।

सन्दर्भ सूची :

- सिंह, अभय प्रसाद, राष्ट्रवाद का भारतनामा, ओरियंट ब्लैकस्वाँन, नोएडा, 2017, पृ0सं0–256।
- चन्द्र, विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वाँन, नोएडा, 2021, पृ0सं0–134।
- बन्धोपाध्याय, शेखर, प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद, ओरियंट ब्लैकस्वाँन, नोएडा, 2017, पृ0सं0।

  वहीं, पृ0सं0–169

  वहीं, पृ0सं0–169
- ग्रोवर, बी.एल., मेहता अलका, आधुनिक भारत का इतिहास, एस. चन्द एण्ड कम्पनी प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 2016, पृ0सं0–183।

  वहीं, पृ0सं0–135
- चन्द्र, विपिन, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2015, पृ0सं0–4–5।

  वहीं, पृ0सं0–4–5
- सिंह, अभय प्रसाद, राष्ट्रवाद का भारतनामा, ओरियंट ब्लैकस्वाँन, नोएडा, 2017, पृ0सं0–257।
- ग्रोवर, बी.एल., मेहता अलका, आधुनिक भारत का इतिहास, एस. चन्द एण्ड कम्पनी प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 2016, पृ0सं0–184।

  वहीं, पृ0सं0–185।